

नई सुबह की ओर

क्षणिकाएँ (लघुकाव्य)

मस्तमन सैनी

BFC PUBLICATIONS



BFC PUBLICATIONS



प्रकाशक:

BFC Publications Private Limited
CP -61, Viraj Khand, Gomti Nagar,
Lucknow – 226010

ISBN:

कॉपीराइट (©) **मस्तराम सैनी** (2021)

सभी अधिकार सुरक्षित।

प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग की न तो प्रतिलिपि बनाई जा सकती है , न पुनरुत्पादन किया जा सकता है और न ही फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग सहित किसी भी माध्यम से अथवा किसी भी माध्यम में, किसी भी रूप में प्रेषित या पुनःप्राप्ति के उद्देश्य से संरक्षित किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति जो इस कार्य के प्रकाशन के संबंध में कोई भी अनधिकृत कार्य करता है, क्षति के लिए कानूनी कार्यवाही और नागरिक दावों के लिए उत्तरदायी हो सकता है।

इस पुस्तक में व्यक्त किए गए विचार और प्रदान की गई सामग्री पूरी तरह से लेखक की है और प्रकाशक द्वारा सद्भाव में प्रस्तुत की गई है। सभी नाम, स्थान, घटनाएं और घटनाक्रम या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से उपयोग की गई है। कोई भी समानता विशुद्ध रूप से संयोग है। लेखक और प्रकाशक इस पुस्तक की सामग्री के आधार पर पाठक द्वारा की गई किसी भी कार्रवाई के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। इस कार्य का उद्देश्य किसी भी धर्म, वर्ग, संप्रदाय, क्षेत्र, राष्ट्रीयता या लिंग की भावना को ठेस पहुंचाना नहीं है।

अपनी बात

मेरी दृष्टि में काव्य अन्तर्मन की अभिव्यक्ति के साथ - साथ बाहरी जीवन में व्याप्त निसंगतियों, विकृतियों, अन्तर्विरोधों व मूल्य विघटन की स्थितियों को उजागर करने का सशक्त माध्यम है। वर्तमान समय में कोरोना महामारी ने हमारी आस्थाओं, विश्वासों व मानवीय मूल्यों को खण्डित किया है। उल्लास, प्रेम, समर्पण व त्याग जैसी भावनाएं इस काल में कसौटी पर रही हैं। कोरोना योद्धाओं के त्याग, बलिदान व समर्पण के अनेक दृष्टान्त हमें जीवन के प्रति आशावादी बनाते हैं। परस्पर आपाधापी, भ्रष्टाचार, लूटपाट व क्रूरता की अनेक घटनाएं भी सामने आईं, इस महामारी ने इन्सानियत के बिगड़े चेहरे को बेनकाब किया।

अनेक विरोधी परिस्थितियां, जटिलताएं व अराजकता होने के बाद भी लोगों में जीने की ललक, आस्था व विश्वास के स्वर गूंजते रहे। अनेक समाजसेवी संस्थाओं व व्यक्तियों ने इस संकट काल में मानवता को जीवित रखने के लिए अमूल्य प्रयास किये। इस उदास मौसम का असर मेरी लेखनी पर भी पड़ा है। मेरा जीवन व जगत के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक रहा है। मेरा मानना है कि जीवन में कितना भी अंधकार क्यों न हो, आशा की लौ जगाये रखना मनुष्य कर्तव्य है। यदि हम संकट देखकर निराश हो गये तो नये रास्तों की तलाश समाप्त हो जाती है। कालिमा में लौ जगाये रखना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। इसके लिए कलात्मक स्तर पर भी सार्थक कार्य किया जा सकता है। अंधेरा अंधेरा चिल्लाने से अंधेरा भागेगा नहीं और गहरा हो जाएगा। अंधकार में उजाले की तलाश लगातार जारी रहनी चाहिए। यही मेरे लेखन का लक्ष्य रहा है।

इन लघु कविताओं (क्षणिकाओं) के माध्यम से मैंने निराशम के इस दौर में आस्था व विश्वास की बात करने का प्रयास किया है। प्रेम, आस्था, विश्वास, उत्साह व त्याग जैसी मूल्यवान भावनाओं को अपना कर ही यह तलाश जारी रखी जा सकती है। हमारे विचारों व सद्व्यवहारों से ही मौसम बदल सकता है। यही मेरा मानना है। कुछ पंक्तियाँ प्रकृति के सौंदर्य व मानवीय व्यवहार पर भी लिखी गई हैं ताकि आसपास के वातावरण की झलक प्रस्तुत की जा सके।

इस कार्य को पूर्ण करने में मेरी धर्मपत्नी सरला सैनी का प्रेम व सहयोग निरन्तर मिलता रहा है। वह इन रचनाओं की प्रथम श्रोता के रूप में सदैव उपस्थित होकर सुझाव देती रही। परिवार के अन्य सदस्यों का भी सहयोग रहा। बेटा रितेश, बेटी अनुपमा, दामाद कुलदीप शर्मा व बहु प्रियंका अपनी प्रतिक्रियाएं लगातार देते रहे। यह क्षणिकाएं फेसबुक पर भी आती रही हैं। मित्रों व पाठकों ने अपनी अमूल्य प्रतिक्रियाएं देकर मेरे इस प्रयास को सार्थक बनाया। इन सबका मैं हृदय से आभारी हूं।

मस्तमन सैनी

“क्यों कदम कदम पर
सता रही है जिन्दगी
लगता है कोई खास सबक
सिखा रही हैं जिन्दगी”

“इस दुनिया मे कितना गम है
अपना दुख तो कितना कम है
क्यों निराश होकर बैठे हो
दिखा दो खुद में कितना दम है।”

“कल जिनको कुर्सी पर बैठे देखा था
लोगों पर बरसते हुए
आज उनको ही देख रहा हूँ
साथियों के लिए तरसते हुए।”

“शिखर पर पहुँच कर
क्यों इतरा रहे हो
अभी तो जीवन की
ढलान बाकी है।”

हमने अपने भीतर ही
दर्द को गुजरते देखा
जब बाहर देखा तो
हर इन्सान को परेशान देखा।”

“ठहरी हुई जिन्दगी को
गुनगुनाते हुए जीयो
कमजोरी को ताकत बनाकर
मुस्कराते हुए जीयो
जनमन के जख्मों को
सहलाते हुए जीयो।”

“खूबसूरत पल होते हैं वे
जब हम स्वार्थ के लिए नहीं
परमार्थ के लिए खड़े हो जाते हैं।”

“कागज की नाव पर सवार होकर
वे चले थे सागर नापने
हवा के एक ही झोंके ने
किनारा दिखा दिया।”

“निन्दक नहीं शुभचिंतक
बनिये जनाब
खुशियां दरवाजे पर
दस्तक देती रहेगी।”

“वह हवाओं के विरुद्ध खड़ा था
किसी का हमदर्द बनकर
इन्सानियत पास खड़ी
मुस्कुरा रही थी।”

“ठहरे हुए तालाब होने से बेहतर है
बहती जलधारा हो जाएं
रेतीली सूखी घास न होकर
हरा भरा किनारा हो जायें।”

“लाखों गम हैं दुनियां में
कुछ अपने कुछ पराये हैं
दुनियां आबाद है उनसे
जो इनसे निकल आए हैं।”

“इतना क्यों आडम्बर रचते हो जनाब
जितना ही असलियत से
दूर होते जाओगे
उतना ही जीवन छूटता चला जाएगा।

क्यों ज्ञान का बोझ लिए
दबे जा रहे हो
आत्ममुग्ध होकर
खुद को ठगे जा रहे हो।”

“अगर बाहर जहर बरस रहा है तो
ग्रहण करना पड़ेगा
जीवन में गंगा बहाने के लिए
भागीरथ प्रयत्न करना पड़ेगा।”

अपने बचपन को सहेज कर
रखिए जनाब
जीवन के अंधेरों में
रोशनी दिखाता मिलेगा।”

“सबसे प्रेम करने के लिए
बच्चा बनना पड़ता है
उसके दर पर झुकने के लिए
सच्चा होना पड़ता है।”

“न छेड़ो तार गमों के
अभी तुफानों से गुजरना है
गाओ तुम गीत जीत के
अभी सागर पार उतरना है।”

“सूरज के आते ही जैसे पूरी कायनात
रौशन हो जाती है
वैसे ही आशा की एक छोटी सी किरण
दिल की विरानियों में रौनक कर जाती है।”

“विश्वास से ही खिलती है
रिशतों की फुलवाड़ी
संदेह के घेरे में तो
गहरे रिश्ते भी मुरझा जाते हैं।”

“जीवन की सांझ तो आनी है सबकी
चलो उम्मीदों के गुलशन को संवार लें
कल को करीब से देखा है किसने
आओ अपने आज को बुहार लें।”

“बिखेर दो खुशियां
खुली हवाओं में
दिल के साथ-साथ
बुझे हुए दिलों को भी सहलायेंगी।”

“किनारे पर लहरे गिनने वालों से
समन्दर पार नहीं होते
स्फ़्तार से डरने वाले
कभी घुड़सवार नहीं होते
जूझने के हुनर बिना हम
मंजिलों के हकदार नहीं होते।”

”दूसरों से चाहते को फूल बरसायें
खुद कीचड़ फैकते हो
विकारों के झूले पर सवार होकर
क्यों इतना ऐंठते हो।”

“खिल उठती हैं पूरी कायनात
जब हम सुख में ही नहीं
दुख में भी साथ खड़े हो जाते हैं”

“अपना आशियां सजाने में हम
इस कदर खो गये हैं
अपनों से तो दूर हुए
खुद से भी दूर हो गये हैं”

संभलकर चढ़िए
शिखर की ओर यारों
कहीं रास्ते में इंसानियत
न छूट जाए।

जब से हम अंधेरो से
टकराने लगे हैं
रास्ते मुस्कराने लगे हैं
धड़करने गुनगुनाने लगी हैं
हौसलें गीत गाने लगे हैं।

“हलचल बनी रहनी चाहिए
सम्बन्धों में
वर्ना ठहरे हुए जल में
काई उग आती है।”

शब्दों के भी अपने रंग होते
हैं जनाब
फैंकने से पहले परख लेने चाहिए।

शिकायतों का बोझ लिए
चले थे कोई अपना तलाशने
मीलों चलकर भी
कोई अपना न मिला।

इधर सेवा के लिए उठे हाथ
इंसानी रिश्ते निभा रहे थे
उधर उनके स्वागत के लिए
फरिश्ते गा रहे थे।

बुरा वक्त हमें परेशान ही नहीं करता
भविष्य का रास्ता आसान भी करता है।

हर मुश्किल आसान होती है
जब हौसले आसमान होते हैं।

अहंकार न देखता है न सुनता है
वह तो दूसरों को नीचा दिखाने के
सपने बुनता है।

अपना दर्द हर जगह
बयां न करें जनाब
यहां मरहम कम
नमक लगाने वाले
ज्यादा मिलते हैं।

अहंकार और नफरत से
परेशान हैं लोग
इसीलिए पास-पास होकर भी
एक दूसरे से अनजान हैं लोग।

क्यों फैंकते हो जहर नफरत का
कुछ तो रहम करो
छेड़कर सरगम प्रेम की
आपस के बहम दूर करो।

हम घर से निकले थे
मासूमियत की खोज में
वह तपती दुपहरी में
मुँह छुपाए
आदमी से पानी मांग रही थी।

खूबसूरत हो जाती है जिन्दगी
जब लौटती है यादें
खुशबु बनकर।

जरूरी नहीं कि बसंत में ही
बहार आए
इंसान अपनी जिद्द पर आ जाये तो
पतझड़ भी गुलजार हो जाए।

मैं खरा, मैं बड़ा के चक्कर में
खुल नहीं पाते हैं लोग
गलतफहमियों के दबाव में
मिल नहीं पाते हैं लोग

रिश्तों के बाजार में आजकल
दिल के सच्चे व जुबां के पक्के इंसान
खुद को ढूंढते नजर आते हैं।

किसी के लिए उदासी की रात है जिन्दगी
किसी के लिए खुशियों का राग है जिन्दगी
जो संकटों में भी न हारे कभी
उनके लिए उजाले की सौगात है जिन्दगी।

कभी सोचा न था आदमी ने
ऐसा कातिल हवा चलेगी
एक दूसरे से फासले बनाकर
फासला ही दवा बनेगी।

एक बहता दरिया है जीवन
टूट-टूट कर बिखरना है
देकर चुनौती अवरोधों को
बिखर कर फिर निखरना है।

क्या ढूँढते हो हाथों की
लकीरों में
भाग्य लकीरों से नहीं
सद्कर्मों से फलता है।

परिवार का भाग्य है बेटी
समाज का सौभाग्य है बेटी
इस संघर्षमय संसार में
जीवन का काव्य है बेटी

डूब जाते हैं बड़े-बड़े जहाज
सागर में तुफान से
टूट जाते हैं बड़े-बड़े महारथी
फिजूल के अभिमान से

मौन रहना और स्वीकार कर लेना
कमजोरी या मुर्खता नहीं है जनाब
यह काबलियत है रिश्ते बचाने की
धीरे-धीरे मचलकर निकल जाती है जिन्दगी।

इच्छाओं के दबाव में हाथों से
फिसल जाती है जिन्दगी।

मुसीबतें हमें सिखाती इंसान बनाती है
अपने पराए की पहचार कराती है।

जहां भी सम्बन्ध गहरा होता है
वहां छल-कपट नहीं
सद्भावनाओं का पहरा होता है।

हम अपने ही जख्म देखकर रोते रहे
जबसे दूसरों के जख्म पर
मरहम लगाने लगे
तबसे अपने जख्म भी कम होते रहे।

इस कोरोना काल में
दूर होकर भी मुस्करायें
गीत गायें
इस अंधकार की छाया में
हौसले के दीपक जलायें।

नफरत के साथ सम्बन्ध बनाने
निकलते हैं लोग
इसीलिए मिलकर बिखर
जाते हैं लोग

गिर जाते हैं पौधे
पानी व खाद के बिना
मुरझा जाते हैं रिश्ते
अहम् और संवाद के बिना।

जमाने की हवा ने कुछ इस कदर
जुल्म ढाया है
कल तक जो अपना था
आज हुआ पराया है।

रिश्तों के बाजार में बोली लग रही थी
भावनाओं की
दिल बेचारा कहीं कोने पर पड़ा
कराह रहा था

अपने बाड़े में कैद होकर
वे बेजान हो गये हैं
अपनी उन्मुक्त उड़ान से
अनजान हो गये हैं।

आत्मसम्मान भी जरूरी है
आदमी के लिए
अधिक झुके तो पीठ पर सवार
हो जाते है लोग

इस कालिमा में उम्मीद की लो
जलाते रहिए
अपनो के दिल के दरवाजे
खटखटाते रहिए।

दूसरों की बुराई करते करते
वे खुद खास हो गये हैं
जब खुद को गौर से देखा
तो निराश हो गये हैं।

रिश्ते बचाए रखने की
आसान तरीका
न किसी से फिजूल की शिकायत
न किसी को फिजूल की हिदायत

यदि वक्त कठोर है
तो खुद भी कठोर हो जाइये
जिन्दगी संवारने के लिए
कुछ तो जोर आजमाइये।

हमने वर्षों लगा दिये
सपने बुनने में
जब मौसम का मिजाज बदला
तो सब बिखर गया

रिश्तों की डोर मजबूत
रखने के लिए
शिकायतों की गठरी
सिर से उतार लीजिए।

प्रेम एक ऐसी खुशबू है जो
निश्छलता से बिखरती है
यह एक ऐसी इबादत है जो
दिल से आत्मा तक
उतरती है

आदमी को कभी रोग ने मारा
कभी भोग ने मारा
कुदरत की इस दुनिया में
कहीं दूर है किनारा।

दरिया की तरह बहते चलो
जुल्मों सितम न सहते चलो
हटा कर हर अबरोधों को
जीवन की कथा कहते चलो।

नफरत का चोला ओढ़कर
वो चले थे खुशियां तलाशने
हर कहीं अंधेरा ही उनका
पीछा करता मिला

चलाकियों से बाज आता नहीं आदमी
इसीलिए बार-बार मात खाता है आदमी
बचपन में हम नंगे पांव नाम लेते थे
गांव भर के बेतरतीब रास्ते
जब से पढ़-लिख गये हैं
पैर झुलसने लगे हैं।

अपेक्षाओं के चक्रव्यूह में
उलझता रहता है आदमी
कभी इस फेर में कभी उस फेर में
सुलझता रहता है आदमी

रिश्तों की महक बनाए रखिये
खुशियों की महफिल सजाए रखिए

जब समय हद से ज्यादा
सताने लगे
तो समझ जाना चाहिए
कि अच्छा समय आने वाला है।

इंसानियत की खोज में
हम कहां-कहा नहीं गये
वह मिली भी तो चन्द
भले इन्सानों के पास

यह वक्त का मिजाज है दोस्तों
कभी वर्ष भी दिन की तरह गुजरते हैं
और कभी एक पल से गुजरना
पहाड़ जैसा हो जाता है।

केवल विचारों से ही नहीं
दिल से भी चलती है दुनिया
अगर दिल की बात साथ नहीं
तो भटकती है दुनिया

कभी योग में कभी भोग में
झूलता रहता है आदमी
इसीलिए अपने सच्चे स्वरूप को
झूलता रहता है आदमी।

पालते रहो सद्इच्छाएं
भावनाओं में रंग उतरने दो
गिराकर भेद-भाव की दिवारें
मानवता को निखरने दो।

हमने कोशिश की भी
वक्त को अपनी बाहों में
जकड़ने की
वह हमारे हाथों से
मछली की तरह फिसल गया।

दिल है तो दर्द भी होगा
दूसरों की दर्द महसूस भी होगा
बेदर्द अगर है आदमी
तो कैसे समाज महफूज होगा।

दूरियां होने पर भी रिश्ते
टूटा नहीं करते
दिल में अपनेपन का अहसास हो तो
प्रेम के धागे नहीं छूटा करते।

क्यों चले हो दुनियां को
अपने जख्म दिखाने को
अब फुर्सत कहां है लोगों को
जख्म पर मरहम लगाने को।

खाक से बने हम खाक हो जाएंगे
खाक से खास न हुए तो
राख हो जायेंगे।
झूठ प्रायः मीठा बोलता है
और सच को सदैव
कड़वा बोलने की आदत होती है।

उंची आवाज में बोलने वाला
बड़ा नहीं हो जाता
कोयल धीमी आवाज में भी
वातावरण में मिश्री घोल देती है।

जिन्दगी का अर्थ है
दर्द के दरिया से गुजरते हुए
आनन्द के सागर की और लौटना।

कोई शरीर के पास है तो दिल से दूर
कोई दिल के पास है तो आत्मा से दूर
जो आत्मा के पास है
उसके सब भ्रम चकनाचूर।

खूबसूरत हो जाती है जिन्दगी
जब जुनून होता है
कुछ कर गुजरने का।

मंजिल तक पहुंचने का
आसमां में उड़ने का
दिलों में उतरने का

हमने कश्ती को समन्दर में उतारा ही नहीं
उतारा होता तो नजारा कुछ और होता
डर गये तुफानों से पहले ही
उतर गये होते तो
हौसलों का सहारा होता।

रिश्तों के बाजार में हमने
दिल की दाब पर लगाया है
अपने दिमाग की खुशी के लिए
उसे बार-बार सताया है

प्रेम में इर्षा द्वेष नहीं
सद्भावनाओं का प्रवेश होता है
यहां खुद को कुर्बान कर देने का
आवेश होता है।

खूबसूरत होते हैं वो पल
जे दोस्तों के पास और
अपनों के साथ बिताए जाते हैं।

हो जाए कितने भी गिल शिकवे
मिटाने चलिये
हाथों से फिसल रही जिन्दगी
एक दूसरे से बतियाते चलिये।

दिल के दर्द डराने से नहीं
हिम्मत बंधाने से निकलते हैं
जैसे उजड़े हुए बाग
संवारने से खिलते हैं।

रास्ता रोकने वाले पत्थर नहीं
बहती जलधारा बनिये जनाब
जो रास्ता बनाती ही नहीं
संवारती भी है।

आज कातिल हवा ने
ऐसा रूख मोड़ लिया है
भीड़ में होकर भी आदमी को
अकेला छोड़ दिया है।

अच्छाई और बुराई हर इन्सान में होती है
लेकिन महत्वपूर्ण होता है
हमारी सोच हमें रोकती कहां है।

खूबसूरत मंजिलें
इन्तजार करती है उनका
जो मुश्किल रास्तों को भी
आसान बना लेने का
हुनर जानते है।

अनेक रंगों से भरा संसार है
स्वीकार कीजिए
अपने हुनर से
इसका श्रृंगार कीजिए

वो क्या जाने दर्द पराया
जो कभी दर्द से गुजरा ही नहीं
लहरों की मार झेलने के लिए
जो सागर में उतरा ही नहीं।

अनुभव अगर दिल से
होकर नहीं आते
वे बेजान पड़ी जमीं पर
कुछ बोकर नहीं जाते।

कुदरत का आशीर्वाद है दोस्ती
सद्भावनाओं की बरसात है दोस्ती
हर संकट में जो खड़ी आस पास
ऐसा खूबसूरत अहसास है दोस्ती।

हो अगर जुनून तो
मंजिलें मिल ही जाती हैं
ठोकरें हमें सिखा सकती हैं
मगर मिटा नहीं सकती।

हमारी सोच ही हमें
अच्छा या बुरा बनाती है
कभी वह पुष्प वाटिका में
कभी कीचड़ में खींच लाती है।

पिता अंधेरों से लड़ता
खुद को खपाता है
मां भरी दुपहरी में
खुद को तपाती
सपने बुनती जाती है
तब जाकर संतान जीने का हुनर
सीख पाती है।

आओ मिटाएं अज्ञान के अंधकार को
हटायें नफरतों के कारागार को
ताकि चेतना को मिल सके नव प्रकाश
प्रकाश को अपना खुला आकाश।

कंकरीट के जंगल में आदमी
अपना जमीर खो रहा है
भावनाओं को गिरवी रखकर
दिमाग से अमीर हो रहा है।

केवल विचार से नहीं
व्यवहार से दुनिया चलती है
यह संसार है जनाब
यहां सबको साथ लेकर ही
नैया पार लगती है।

दूसरों को बुरा कहते कहते
खुद बुरे हुए जा रहे हो
संभल कर छोड़ो अपने साज के तार
क्यों बेसुरे हुए जा रहे हो।

हम चले थे शहर में दर्दे दिल सुनाने
अचानक दरवाजे खिड़कियां
बन्द हो गए
दिल बेचारा दिमाग से हारा
तड़प रहा था।

आज बीती जिन्दगी की
फाइल खोलकर बैठा था
बचपन की तस्वीरें
सबसे सुन्दर नजर आई।

परिन्दों की उन्मुक्त उड़ान है प्रेम
जो बान्धता नहीं विस्तार देता है
जोड़कर सबके कल्याण से
हमारी सोच को आकार देता है।

आशा निराशा को डेरा है जिन्दगी
अच्छाई बुराई का बसेरा है जिन्दगी
ठोकरो से जो न हारा उसके लिए
नया सवेरा है जिन्दगी।

बहर से अधिक तीव्र होती है
हमारे भीतर की लड़ाई
जो हमें तोड़ती ही नई
शान्त होने पर
स्वसे जोड़ती भी है।

इस कोरोना काल में
गुम सुम से क्यों हो
छेड़ो तराने बिखेरो मुस्कान
आपकी सद्भावनाओं से
खिल उठें आसमान।

बुरे दिन हमें रूलाते ही नहीं
सिखाते भी है
धने अंधेरे से निकालकर
बेहतर इन्सान बनाते भी है।

वैसे ही आदमी आदमी में
दूरियां कम न थी
कारोना ने आकर उसका
सही चेहरा दिखा दिया।

आये कितनी भी आंधियां
जीना तो पड़ेगा
जीवन में खुशियां लाने के लिए
जहर तो पीना पड़ेगा।

हमारी सोच से ही
हमारी दुनियां बनती है
सोच के विस्तार से ही
यह दुनिया खिलती है।

दुनियां को जानने के लिए
हमें खुद से गुजरना जरूरी है
स्वयं को जाने बिना
हर कोशिश अधूरी है।

आकाश पर उड़ता पक्षी
बार-बार जमीन पर आता है
जमीन से जुड़कर शिखर की
ओर बढ़ता आदमी ही
पहचान बनाता है।

खूबसूरत होते हैं वे रिश्ते
जहां दिखावा नहीं, छलावा नहीं
केवल अर्पण होता है
सम्बन्धों को बचाए रखने का
समर्पण होता है

पुकारते चलो कभी अपनो को
कभी परायों को
दिलों पर जमी बर्फ
कुछ तो पिघलेगी।

आओ उतरें जमीं पर
एक इन्सान की तरह
खुशबू की तरह बिखर जाएं
तोड़कर दिल की जड़ता
खुला आसमां हो जायें।

धूल के फूल है हम
कम फिर धूल हो जाएंगे
जी लें अगर सार्थक जिन्दगी तो
महकते फूल हो जाएंगे।

बहती नदी की तरह है जीवन
अगर रोका तो बिखर जाएगा
चलता रहा तो निखर जाएगा।

कभी तीखी तलवार है शब्द
कभी फूलों के हार हैं शब्द
कभी दिलों को जोड़ने वाले
सुन्दर उपहार हैं शब्द।

इस उदास मौसम में
खुद को बचाए रखिये
हो कितनी ही दूरियां
संवाद बनाए रखिये।

हम जहर फैलाने से नहीं
जहर हटाने से जाने जायेंगे
अगर इन्सान है तो
जीवन बचाने पर पहचाने जायेंगे।

मैंने देखा शहर में प्रेम
घर के आंगन में छुप-छुप के
मिल रहा था
उधर गांव में खेतों खलियानों तक
अठखेलियां कर रहा था।

अड़ियल को समझाते समझाते

ज्ञान ही नहीं

चैन भी चला जाता है

कर लो कितनी कोशिशें

सब धरा रह जाता है।

हो कितना ही बूरा वक्त

गुजर जाएगा

हमारे हौसले से

हमारा कल फिर निखर आयेगा।

वे उन्हें पुकारते रहे

रास्ता बूहारते रहे

अहं ने उन्हें रास्ते पर चलने न दिया

एक दूसरे से मिलने न दिया।

खुशी आती है हवा के झोंकों की तरह
पल भर में गुजर जाती है
उदासी दिल को भीगो कर
आदमी को संवार जाती है।

हमारी सोच से ही हमारी जिन्दगी
बनती बिगड़ती है
हो अगर सोच अच्छी तो
घने अंधकार में भी प्रकाश किरणें फूट पड़ती है।

बेलगाम इच्छाओं पर अंकुश लगाईये जनाब
छोटी-छोटी खुशियां भी
जिन्दगी से खूबसूरत बना देती है।

केवल सपने देखने से
वे साकार नहीं होते
किनारे पर उछलने से
सागर पार नहीं होते
न हो जुनून तो सपने आकार नहीं लेते।

कभी रूलाती कभी हंसाती है जिन्दगी
कभी अर्श पर कभी फर्श पर पहुंचती है जिन्दगी
अगर ले लें किसी का दर्द उधार तो
जीने को सार्थक कर जाती है जिन्दगी

संघर्ष हमें सिखाता ही नहीं
भीतर से पकाता भी है
उलझनों के चक्रव्यूह से बाहर लाकर
एक अच्छा इन्सान बनता भी है।

कितनी ही भगदौड़ कर लें बाहर
उछलकूद कर लें
शांति के लिए
अपने पास ही लौटना होता है।

केवल विरोध में होना ही
पर्याप्त नहीं होता
महत्वपूर्ण होता है
सत्य के करीब होना।

पक्षी भी शाम तक उड़ान भरकर
पहुँच जाते हैं अपने अशियाने में
एक इन्सान है जो वर्षों लगा देता है
दिल से दिल तक आने में।

नफरत से बस्तियां उजड़ती हैं
बसती नहीं
पुकारो प्रेम से सबको
जिन्दगीयां संवर जाती है मिटती नहीं।

किरायेदार होकर भी वे
मालिक मकां हो गये हैं
इसी भ्रम में डूबकर
आसमां हो गये हैं।

हमारी सोच से ही
हमारा जीवन बनता बिगड़ता है
अंधेरे की ओर दौड़ेंगे तो अंधेरा मिलेगा
लगेरेंगे अंधेरे से तो नया सूर्य उगेगा।

खिलकर कांटों में पौधा
गुलाब हो जाता है
निकलकर ठोकड़ों से आदमी
लाजवाब हो जाता है।

खिले फूल चमन की शान होते हैं
खुशियां बिखेरना उनके अरमान होते हैं
बुझे चेहरों से निखरता नहीं आदमी
बुलंद हौसले आदमी की पहचान होते हैं।

दूर से ही सही
मिलते रहिये
मुस्कराते रहिये
इस उदास मौसम में
खुशी के रंग बरसाते रहिये।

इस कोरोना काल में
अपनों का साथ ही जिन्दगी है
इस फैले अंधकार में
आपस का प्रेम ही रौशनी है।

फूल की खुशबू की तरह होती है
सुखद स्मृतियां
ये दुख के पलों में हमारे दिल को
सहलाती ही नहीं
जीवन को महकाती भी हैं।

केवल जीना ही नहीं
जीवन बचाना भी जिन्दगी है
रखकर हथेली पर जान
बन जाना अफसाना ही
जिन्दगी है।

खूबसूरत होते हैं वे पल
जब हम बेवजह
किसी की मदद कर पाते हैं।

दूसरों को बेहतर बनाने के लिए
खुद सुधरना पड़ता है
जीवन को संवारने के लिए
जमीन पर उतरना पड़ता है।

खिल जाते हैं फूल
पतझड़ जाने के बाद
संवरजाते हैं जीवन
मुसीबतें आने के बाद।

किसी में कमियां नहीं
खूबियां देखिये जनाब
अपने भीतर का अंधेरा छट जाएगा
अंह का पर्दा हट जायेगा।

हमारी सोच से ही हमारी दुनियां
बनती बिखरती है
सुख बांटोगे तो खुशियां मिलेगी
दुख बांटोगे तो विकृतियां मिलेगी।

बदलाव बातों से नहीं
जजबातों से होते हैं
और जजबात दिमाग में नहीं
दिल में खिलते हैं।

खींच लाते हैं जो कशती मझधारों से
वह नहीं घबराते तूफानों से
मंजिले चूम लेती है कदम उनके
चुरा लाते हैं जो रोशनी आसमानों से।

जख्म नहीं, जख्मों पर मरहम
लगाईये जनाब
देखकर इंसानियत मुस्करायेगी
दिलों पर जमी बर्फ थोड़ा
पिघल जाएगी...।

दे सकें किसी चेहरे पर मुस्कान
हम ऐसे कुछ काम करें
देकर सहारा किसी बेसहारे को
एक बेहतर इन्सान बने।

टूट जाती है नफरत की दीवारें
प्रेम गीत गाने वाले चाहिए
झुक जाती है मीनारें
जोश आजमाने वाले चाहिए।

हमारी नकारात्मक सोच
हमारे जीवन रस को सोख लेती है
रंगीन हो जाती है दुनियां
जब सकारात्मक सोच होती है।

बार -बार लड़खड़ाने से नहीं
संभल जाने से मंजिलें मिलती है
किसान के कतराने से नहीं
मिट्टी हो जाने से फसलें खिलती हैं।

परस्पर संवाद के बिना
गलतफहमियों का शिकार
होता है आदमी
इसीलिए एक दूसरे के पास
आ पाता नहीं आदमी।

करुणा और दया की भावना है
तो हम दुनिया के खूबसूरत प्राणी है
पत्थर दिलों की तो
कंकरीट के जंगल में कोई कमी नहीं।

मित्र, कमियां निकालने वाले नहीं
समझने वाले होते हैं
बिन कहे मदद करने वाले होते हैं।

पूरा आसमान पाने की तलाश में
भटका रहता है आदमी
कुछ और, कुछ और की भूल भूलैया में
अटका रहता है आदमी।

जीवन में निराशा के नहीं
आशा के बीज बोइये जनाब
कलको बाहर आयेगी
जीवन संवार जायेगी।

होकर आंधियों पर सवार
तोड़ दो सब बाधाओं के द्वार
खूबसूरत मंजिले सुकून से नहीं
जुनून से मिलती हैं।

जब विदाई निश्चित है सबकी
ते आओ कुछ ऐसे कर्म कर जाएं
लगाकर गले इंसानियत को
दूसरों के जख्मों पर मरहम
कर जायें।

मिल रही है सफलता तो
जमीन पर रहिये जनाब
अंह व वहम मत पालिये
खुद को सम्मभालिये।

टूट जाती है शाखायें पक्षी नहीं डरता
छूट जाती है आशायें इंसान नहीं हारता
एक पंखों के जोर पर उड़ता है
दूसरा अपने हौसले से उड़ान लेता है।

आत्मविश्वास की पतवार से
डगमगाती नैया
भंवर से निकल आती है
ठोकरोँ के वार से
लड़खड़ाती जिन्दगी
संवर जाती है।

हम जितना अधिक
भीतर के अंधेरे से टकराते हैं
उतना ही शीघ्र
उजाले के पास आते है

खुशी अधिक जोड़ने से नहीं
बहुत कुछ त्यागने से मिलती है
बहर अधिक भागने से नहीं
खुद के पास आने से मिलती है।

जमाने की बेरहम हवा ने
आदमी को अधिक लालची व
स्वार्थी बनाया है
इसीलिए वह दूसरों के साथ -साथ
अपनों से भी हुआ पराया है।

मन को साधने से हम
संसार को साध पाते हैं
मन की बेचैनी से हम
अस्थिर व हिंसक हो जाते हैं।

हो कितनी ही परेशानियां
फैसला जीने का होना चाहिए
जीवन में अमृत पाने के लिए
हौसला जहर पीने का होना चाहिए।

फूलों की तरह खिलो
खुशबू की तरह बिखर जाओ
अपने हुनर से दुनिया को
और बेहतर बनाओ।

है बहुत बुराई इस दुनिया में
यह कह देने से क्या फर्क पड़ता है
सुधार लें हम खुद अपने को
फर्क सिर्फ इससे पड़ता है।

फैंक दिए जाते हैं जो लहरों में
हाथ पैर वही मारते हैं
पलते हैं जो संघर्षों में
जीवन वहीं सवांरते हैं।

क्यों बोते हो बीज नफरत के
यह गुलिस्तां उजड़ जाएगा
छेड़िए तार प्रेम वीणा के
फैलता अंधकार भी
गुजर जाएगा।

बहुत खामोश हो गये हैं
आजकल के रिश्ते
जब तक न पुकारें
हलचल नहीं होती।

हम उनको पुकारते रहें
ताकि कुछ जमी बर्फ पिघले
उन्होंने समझ लिया कि
कुछ मतलब है।

हम जो कहते हैं
व्यवहार में उतरे तो असर होता है
वरना सब शब्दजाल बेअसर होता है।

दीपक है हम तो जलना पड़ेगा
अंधेरे के विरुद्ध लड़ना पड़ेगा
जो जाये हवा चाहे कितनी बेवफा
हमें तो उजाला करना पड़ेगा।
कल तक खामोशियां
पसरी हुई थी शहर में
आज गांव ने भी उसके लिए
द्वार खोल दिए।

एकान्त होना निरर्थक नहीं
सार्थक होता है
वह में उलझनों से
निकालकर
नया वैचारिक स्वर्ण देता है।

आइये इस बंजर होती जमीन पर
कुछ प्रेम के बीज बो दें
नफरत की फसल हटाकर
खुशियों की उम्मीद संजो लें।

खुशियां घर तक लाने में
जुटा रहता है आदमी
इसी भागमभाग में
उम्र लुटा देता है आदमी।

हमारी जुबान ही हमारी पहचान है
मीठा बोलकर
अमृत बरसा जाती है
कड़वा बोलकर जहर घोल जाती है।

किसी को दुःखी देखकर
मुस्कुराना
यह तो अच्छी बात नहीं
जले पर नमक छिड़क जाना
यह भी अच्छी बात नहीं।

सत्य सूर्य की तरह होता है
जिसे थोड़ी देर के लिए
छुपाया जा सकता है
हमेशा के लिए नहीं।

मन में सच्चाई और अच्छाई से ही
बात बनती है
प्रेममय वाणी से ही
दुनिया बेहतर बनती है।

बजने दो प्रेम के खड़ताल
मिलने दो ताल से ताल
नफरत ठहर जायेगी
देखकर अपने कुकर्मों को
खुद भाग जाएगी।

डर गई है झोंपड़ी
तूफानों के प्रकोप से
महलों की तमन्ना है कि
हवा कुछ और तेज हो।

हवा के साथ नहीं
सत्य के साथ चलिये जनाब
खुद को भी तसल्ली होगी और
स्थितियां भी बेहतर होंगी।

अक्सर जीवन में देखा है हमने
ओछे लोग ही हमें
बड़ा सबक सिखा जाते हैं।

छोड़िये अहम् और वहम को
एक दूसरे पर एतबार आयेगा
उतारिये शिकायतों के बोझ को
रिश्तों में निखार आएगा।

वो क्या जाने मेहनत का स्वाद
जिन्हें विरासत में सब मिला है
जीवन के अंधेरो से लड़कर ही
विरासत का फूल खिला है।

आइये इस उदास मौसम में
कुछ गुनगुनाया जाए
हटाकर गर्मों की छाया को
गीत गाती महफिल को सजाया जाए।

हो जाए दिल टुकड़े टुकड़े
हो चाहे दुखड़े हजार
जमाने को चेहरा सुहाना
दिखाना पड़ता है।

सोच से ही हमारी दुनिया बनती है
नफरत से देखोगे तो
हर तरफ कांटे नजर आयेंगे
प्रेम से देखोगे तो कांटे भी
फूल बन जायेंगे।

बार बार लड़खड़ाना कभी गिर जाना
फिर गिरकर खड़े हो जाना
बुरा नहीं है दोस्तों
यदि हम टूटते नहीं, सीखते हैं।

सूखे मरूस्थल में पौधे तैयार नहीं होते
बिना पतवार के नाविक सागर
पार नहीं होते
अगर प्रयत्न भरपूर न हो तो
सपने साकार नहीं होते।

दिल पर अचानक
गिरने लगी हैं बूंदें
यादों के बादल कभी
रिक्त नहीं होते।

प्रेम के राही हैं हम
थोड़ा मुस्कुराते चलिये
नफरत के रागों को मिटाके चलिये
हो जाएं अगर निराश कभी तो
आशा के गीत गुनगुनाते चलिये।

मुस्कुराने की नेमत मिली ठे
इंसान को
क्यों मुँह फुलाये बैठे हो
छेड़ो तराने प्रेम के

कई बार खामोशी
हमारे रिश्ते की नहीं बचाती
हमेंअ पने करीब लाकर
बेहतर इंसान भी बनाती है।

हों सपने महान तो
कोशिशें तूफान होनी चाहिए
हों ठोकरें पहाड़ फिर भी
हौसलें आसमान होने चाहिए।

दिल के मधुर तार छेड़िये
किसी से न यूँ मुँह फेरिये
पुकारता हो अगर दिल से कोई तो
यूँ न नजरें तरेरिये।

सम्भल जाते हैं रिश्ते
कुछ धैर्य से काम लीजिए
बतियाते मुस्कुराते हुए
रास्ते आसान कीजिए।

आशा की एक छोटी सी किरण
मन में नये समने जगा जाती है।
हो चाहे कितना घना अंधकार
हमें रोशनी से नहला जाती है।

पुकारते रहिए सुधारते रहिये
रिश्तों के बिगड़े तारों को
वर्षों से बन्द पड़े साजों से
यूं भी आवाज नहीं आती।

इस बाजार में दिल और जजबात
कहीं खो गये हैं
अब जरूरत के हिसाब से
मिलते बिछड़ते हैं लोग।

हर आदमी विशेष है इस दुनिया में
जब तक हम अंधेरे में होते हैं
दूसरों के लिए कांटे बोते हैं
उजाले में आते ही दूसरों के लिए
खुशियां बटोर लेते हैं।

हमारे कर्मों का खेल है जिन्दगी
इसीलिए सुख दुख का मेल है जिन्दगी
आ जाएं महादेव की शरण में तो
आनन्द ही अमरबेल है जिन्दगी।

उतार लो कुछ बोझ अपना
सफर आसां होगा
बांट दो खुशियां दूसरों को
खुदा भी मेहरबां होगा।

हम मुस्कुराएंगें तो मुस्कान मिलेगी
उदास हो जाएंगें तो
उदासी मिलेगी
ये इन्सानी दुनियां है यारो
बोयेंगे जहर तो
विषबेल फैलेगी।

कई बार पौधे उग आते हैं
चट्टानों में भी
खिल जाते हैं फूल
बंजर स्थानों में भी
हो अगर जुनून तो इन्सान
खींच लाता है कशती तूफानों से भी।

अहंकार किसी को स्वीकार नहीं कर पाता
इसीलिए किसी को पुकार नहीं पाता
वह डूबा रहता है खुद अपने ही नशे में
इसीलिए खुद को सुधार नहीं पाता।

केवल दिनों का गुजर जाना ही
जिन्दगी नहीं है
लोगों के दिलों में उतर जाता ही
जिन्दगी है।

आओ इस उदास मौसम में
कुछ नये गीत गायें
साज पर न सही
अपनी आवाज से ही
एक दूसरे के पास आयें।

बरसते हैं बादल तो
धरती मुस्कुराती है
उमड़ते हैं आंसू तो
दिल की बंजर जमीन
उर्वरा हो जाती है।

शोर मचा लो कितना
चाहे जोर लगा लो
सत्य छुप नहीं सकता
जो टिका हो सत्य पर
वह झुक नहीं सकता।

देकर स्नेह मिट्टी को
कठोर बीज भी फूटता है
सहलाकर टूटे दिलों को
मधूर संगीत गूंजता है।

सबके लिए आसान नहीं होता
जीवन जीना
तमाम हो जाती है जिदंगियां
आशियाना सजाते सजाते और
अपनों को बचाते बचाते।

जो व्यक्ति कर्म में लीन था
वह गुनगुना रहा था
दूसरा उसकी कमियां गिनाता
छटपटा रहा था।

बुझी हुई आग को फिर जलाया जाए
उदास दिलों को थोड़ा सहलाया जाए
सुंसावस्था में है लोग अगर
क्यों न उन्हें जगाया जाए।

जिन्दगी भी खुशियां घर तक लाने में
जुटा रहता है आदमी
पिछले दरवाजे से उम्र कब निकल जाती है
खबर ही नहीं होती।

यादें हमें कभी हंसाती
कभी रूलाती हैं
कभी जीवन के अंधकार में
रोशनी बिखेर जाती है।

यूं ही गले न पड़िये किसी के
जरा हटकर चलिये
ये हादसों का शहर है
जरा बच कर चलियो।
करने दो मस्ती
होने दो नादानियां
बार बार नहीं दोहराई जाती
बचपन की ये शैतानियां।

जब हम किसी को सताते नहीं
किसी के हो जाते हैं
किसी को जख्म नहीं देते
मरहम लगाते हैं
तब इन्सान तो क्या फरिश्ते भी
मुस्कुराते हैं।

बाहर की हमर मुसीबत से लड़कर
पार हो जाता है आदमी
रिश्ते बचाने के लिए कई बार
अपनों से खुद हार जाता है आदमी।

हमारी नियत से ही हमारा
आचरण बनता बिगड़ता है
नीयत अच्छी होगी तो हम
परायों को भी अपना बना लेंगे।
बूरी नियत से अपनों का साथ ही गंवा देंगे।

उधर फलों से झुके वृक्ष
लोगों के लिए रस बरसा रहे थे
इधर सेवा के लिए उठे हाथ
इन्सान का कद बढ़ा रहे थे।

धीरे - धीरे चलती है जिन्दगी
कभी ठोकरोँ से कभी प्यार से
खिलती है जिन्दगी
दे पायें किसी के चेहरे पर मुस्कान तो
कुछ संवर जाती है जिन्दगी।

हम जितना झाँकते हैं
दूसरोँ के घरों में
उतना अंधेरा पास आता है
दूसरोँ की कमियाँ खोजते खोजते
अपने हिस्से की धूप भी
अंधेरा खा जाता है।

है अगर जमीन उर्वरा तो
फसल अच्छी होगी
हमारी अच्छी सोच से ही
कोशिशें सफल होंगी।

इस कातिल हवा से
हैरान परेशान है आदमी
दुआ है मालिक से
अब वो जीवन बरसाती हवा
बिखेर दें।

केवल विचार से नहीं
हमारे व्यवहार से
खुशियां उतरती हैं जमीन पर
देखिये दिमाग के झरोखों से
अंधेरों से लड़कर ही रोशनी
बिखरती है जमीन पर

किसी को अच्छा बुरा कहने पहले
सोच लिया कीजिए
न जाने कौन किस हालात में जी रहा
खोज लिया कीजिए

हम किसी के लिए गम के आंसू नहीं
खुशी के आंसू बन जाएं
खिल जाएं दूसरों के दिल
और हम बरसते बादल हो जाएं

इस उदास समय में
नफरत की नहीं प्रेम की जरूरत है
आओ दिल के बंद पड़े किवाड़ खोलें
खुली हवा आएगी, नफरत निकल जायेगी।

अपनी संतान को उड़ान देने के लिए
जमीन आसमान एक करता है आदमी
अपने जख्मों को खामोशियों में छुपाकर
उनका रास्ता आसान करता है आदमी।

केवल चेहरे की नहीं दिल की
कालिख भी हटाईये
हैं अगर रोशनी के तलबगार तो
दूसरों के रास्तों पर दीपक भी जलाईये।

वह दूर से गुजरती है तो
दिल को आहट मिल जाती है
यह प्रेम का ही असर है
जो रूह तक पहुँचता है।

सफलता की डगर पर हो तो
इन्सानियत बचाकर चलिए
यह वक्त है जनाब
करवट बदल लेता है।
उमड़ घुमड़ कर बादल धरती पर
रस बरसा जाते हैं
मुसीबतों से उलझ सुलझकर इन्सान
जीवन को बेहतर बना जाते हैं।

जो कल तक दोस्ती की दुहाई देते
थकते न थे
आज पीठ पीछे कीचड़ उछालने में
अव्वल निकले।

महामारी ने पैर पसार लिए हैं
आप न पैर पसारो यारो
सावधानी से ही हम जंग जीत पायेंगे
बेवजह न बाजार निकलो यारो।

ये दुनिया है यारो
यहां कोई दूसरों से जल जलकर
अपना जीवन बर्बाद कर लेता है
कोई दूसरों के लिए जलकर
दुनियां को आबाद कर देता है।

बिखर जाते हैं फूल हवा में
खुशबू छोड़ जाति है
अपने बुलन्द हौसले से इन्सान
हवा का रूख मोड़ जाते हैं।

हमारी सोच से ही हमारी
दुनिया बनती बिगड़ती है
बुराई खोजेंगे तो अंधेरा मिलेगा
अच्छाई की खोज से अंधेरे में भी
प्रकाश खिलेगा

गिरता है पता पेड़ से
हवा उड़ ले जाती है
उड़ता है हवा में आदमी तो
कुदरत सबक सिखा जाती है।

धीरे से छेड़िए अपनो के
दिलों के तारों को
अधिक तनाव से अक्सर
मोतियों की मालाएं
बिखर जाया करती हैं।

इस मुश्किल वक्त में
हमारी हिम्मत व सावधानी ही
काम आयेगी
बांटते रहे एक दूसरे के दर्द को तो
यह अंधेरी रात भी कट जायेगी।

सुख दुख भारी जिन्दगी
गम बेहिसाब है
हंसते हंसते निकल आता है
जो गमों से
वही बेमिसाल है।

उड़ता है पंतग आसमान छूने को
गिरकर धूल हो जाता है
उतरता है भीतर इन्सान तो
संवर पर फूल हो जाता है।

हम खुद बदल गये तो
बहुत कुछ बदल जाता है
खुद जलकर ही दूसरों का दीया
जल पाता है।

उतरे हो जिन्दगी में तो
सद्कर्मों का प्रसार कीजिए
किसी के दिल को ठेस न पहुँचे
ऐसा कारोबार कीजिए।

हमारे भीतर की धूप ही
बाहर के उजाले का कारण बनती है
बांटेंगे जितना दूसरों को
उतना ही अधिक खिलती है।

इस कठिन दौर में
लोगों में डर नहीं हौसंला बढ़ाइये
दूर रहकर भी दिलों में
आस्था की लौ जगाईये।

खामोशी से होते हैं सद्कर्म तो
करते चलिये
अधिक शोर की उम्र नहीं होती।

बिखरे हैं हम बहुत
अब और न खुद को बिखराईये
इस अंधेरे वक्त में खुद को बचाकर
रोशनी के गीत गाईये।

दर्द बर्दास्त से बाहर हो तो
थोड़ा अपनो से बांट लिया कीजिए
प्रेम के दो शब्दों से टूटे दिल को
सहला लिया कीजिए।

कभी जिन्दगी में उल्लास के चर्चे बहुत थे
आज दर्द के सिरहाने
ठहर गई है जिन्दगी

बदल जाता है समां
थोड़ा सुकून चाहिए
ठहर जाता है तूफां
जीने का जुनून चाहिए।

करेंगे जितना संघर्ष
वर्तमान में हम
उतना जिन्दादिल इन्सान होंगे
भूत और भविष्य की चिन्ता में
अपना वर्तमान भी खो देंगे।

आशाओं की डोर में बंधा आदमी
खुशियां और सपने संजो पाता है
निराशा के भंवर में फंसकर वह
अपना भी नहीं हो पाता है।
पालते रहे भीतर अंधेरा तो
बाहर भी अंधेरा दिखेगा
हमारे भीतर के उजाले से ही
बाहर सवेरा खिलेगा।

बहुत कोमल होता है दिल
तीखे अल्फाज सह नहीं पता है
लेकिन प्रेम के दो बोल से ही
लाजवाब हो जाता है।

हमारे कष्ट ही हमें
नमा रास्ता दिखाते है
हो कितना ही धना अंधकार
हमें रोशनी की ओर ले जाते हैं

यूं ही नहीं हो जाता
दिल दरिया किसी का
दर्द के समंदर से गुजर कर
आना होता है

तड़पता है आदमी पूरे जंहा के लिए
संघर्ष यहां बेइंतहा मिलता है
ले लो चाहे उड़ान पूरे आसमां में
फिर भी सब कुछ यहां कहां मिलता है।
दूर तक अंधेरा ही अंधेरा फैला है
आईए कुछ आस्था के दीप जलाएं
भूलकर बैर विरोध सुर्गों को
खतरे में पड़ी जिन्दगी बचाएं।

इस मुश्किल समय में
एक दूसरे को पुकारते रहिए
बतियाते रहिए मुस्कुराते रहिए
इस उजड़ती दुनियां में
स्नेह के बीज बिखराते रहिए।

क्यों आंसू बहाते हो
उस निर्दयी के लिए
प्रेम होता तो रोने ही क्यों देता।

इन्सान है हम
फरिश्ते न हो जाएं
अहंकार के भंवर में गोते लगाकर
कहीं इन्सानियत न खो जाए।

इस नाजुक वक्त में
एक दूसरे पर कीचड़ न उछालिये
पहले ही हवा में जहर हैं बहुत
एक जुट होकर हालात सम्भालिए।
जल रहे हैं दीपक प्रेम के तो
नफरत की हवा न दो
टूटे बिखरे हैं दिल कहीं तो
उन्हें स्नेह की दवा दे दो।

लाखों गम हैं दुनियां में
कुछ अपने कुछ पराये हैं
दुनिया आबाद है उनसे
जो इनसे निकल आए हैं।

कभी गम अपार
कभी गमों पर सवार
होता रहता है आदमी
लेकर उम्मीदों की पतवार
गमों का सागर पार कर लेता है आदमी।

जिन्दगी में धूप और छांव चलती रहती है
कभी उम्मीदों की ठांव भी छलती रहती है
छोड़े न होंसले ही डोर तो
बुझी रोशनी फिर से जलती रहती है।

जिन्दगी की मधुर स्मृतियां
सम्भालकर रखिए
न जाने कब उदास मौसम में
दिल को मुस्कान देकर निकल जाए।

जो तुफानों में भी कशियां चलाते रहे
वे मंजिल तक पहुँच गए
बाकी किनारे पर रूकावटें
गिनते ही रह गए

हमारी खुशियां हमारी सोच पर
निर्भर करती है
कोई फैलते अंधकार में भी मुस्कराता है
कोई बरसते उजाले में मातम के गीत गाता है।

बिखेर कर खुशबू हवा में
फूल चमन को महका देता है
मिटा कर अंधेरो को आदमी
जीने को सार्थक बना देता है।

यूं ही नहीं मिल जाती मंजिलें

इन्सान को

पहाड़ जैसी ठोकरो से

टकराना, जूझना फिर

पार पाना होना है।

बिना संवाद के बढ़ जाती है दूरियां

लोग वो भी सुन लेते हैं

जो हम कहते नहीं।

अपने बाड़े में कैद होकर इन्सान

मिलजुल नहीं पाता

खुल नहीं पाता

सहजता के अभाव में

पूरी तरह खिल नहीं पाता।

दीजिए अपने पंखों को उड़ान
खोलिए दिल के दरवाजे
बांटें कुछ दर्द परायों के भी
ताकि थम जाए ये
कराहती आवाजें।

हमारा आत्मविश्वास और धैर्य ही
निश्चित करता है हमारी मंजिलों को
वर्षों लग जाते हैं सपनों को
जमीन पर उतारते उतारते।

बहुत गरूर है आसमां को
अपनी बुलंदियों पर
वह बेखबर है कि हर उंचाई
जमीन से ही दिखाई देती हैं।

जब फैसला आसमां का हो तो
धरती की कहा चलती है
आदमी के जोर से
हर चीज कहां बदलती है।

ठोकरे खा खा कर दी
आदमी सम्भलता है
समुद्र मंथन से ही तो
अमृत निकलता है।

वे क्या कूदेंगे बहते दरिया में जो
पानी से ही डरे हुए हैं
टादमी के आत्मविश्वास से ही
मरूस्थल भी हरे हुए हैं।
बहुत फर्क पड़ता है हमारी जुबान से
मीठी जुबान मुस्कान देकर जायेगी
नफरत भरी जुबान जहर बिखेर जायेगी।

दिमाग से नहीं दिल से चलिए जनाब
ये बेजुबां समां थोड़ा खिल जाएगा
दूसरों के चेहरे पर भी मुस्कान दे जाएगा।

जो हम खुली आंखों से देख पाते
वह शान्त मन से देख पाते हैं
लगायेंगे भीतर जितनी गहरी डुबकी
उतना ही निखर आते हैं।

छोड़ दें हम नफरत की आवाजें
मिलकर जलधारा हो जायें
जड़ता ओर कुंठाओं को पिघलाकर
हरा भरा किनारा हो जाएं।

पालते रहिए उम्मीदों की फुलबाड़ियां
देते रहिए सपनों को उड़ान
आती रहेंगी महकती पुरवाइयां
फिर से खिलेगा आसमान।

समंदर जैसी तासीर रखिए जनाब
फिक्र मत कीजिए
कौन आकर विस्तार दे गया।

दो एक दूसरे की फिक्र तो
चलते हैं रिश्ते
संकट में भी हो जाएं साथ तो
दौड़ते हैं रिश्ते।

हर कोई मजा नहीं लेता
किसी को परेशान करके
जो दिल की जुबां समझते हैं
वो अक्सर ऐसा गुनाह नहीं करते।

हो जिसमें जुनून उसे
निराशाओं से कोई वास्ता नहीं होता
खोज लेता है वह उन मंजिलों को
जहां तक कोई रास्ता नहीं होता।

गजब दास्तां है जिन्दगी
कभी धूप कभी छांव है जिन्दगी
बांटते रहें सुख दुख एक दूसरे के तो
खुशियां की सुन्दर ठांव है जिन्दगी।

हर नजर में हम खरे उतरें
यह सम्भव नहीं
अपने भीतर ही ठीक से उतर जाएं
तो बेहतर हैं।

बिना स्नेह और विश्वास के रिश्ते
मजाक हो जाते हैं
जैसे बिना खाद और पानी के
पौधे राख हो जाते हैं।

आदमी ने पेड़ काट-काट कर
बसा ली बस्तियां
घर तो पास-पास आते गये
इन्सान दूर हो गया।

इच्छाओं का बोझ लिए
आदमी
परेशान रहता है
उतरता है यह बोझ जितना
उतना जीवन आसान होता है।

हम पालते हैं जिस भाव को
वही स्थायी हो जाता है
नफरत में जियेंगे तो नफरत फैलायेंगे
प्रेम की डोर में बन्ध कर सबके हो जाएंगे।

टपक पड़ते हैं पक्के छत भी
यदि वर्षा धनधोर हो
पिघल जाते हैं पत्थर दिल भी
अगर भावनाओं में जोर हो।

उन्हें क्या खबर थी कि
हम अंगारों पर चलकर आए हैं
वे मुस्कुराए कि हम कहीं
चोट खाए हैं।

उगेंगे पेड़, जागेंगे जंगल
फूटेंगे झरने, गाएंगी नदिया
महकेगा समां, मुस्कुराएगी जिन्दगी।

होती है अगर अहंकार से
मुलाकाते तो
जरा सम्भालकर मिलिए
सूखे हुए पेड़ों से कभी छाया नहीं मिलती।

दर्दे दिल की दवा हम करते रहें
कम्बख्त वहीं मांगा
जहां जाने से हम डरते रहे।

खाकसार है आदमी
उस कुदरत के आगे
उछलता कूदता यूं है जैसे
आसमां हो जाए।

हमारी नजरों की धूप भी
क्या कमाल करती है
गुजरती है दिलों से
रौनक बेहिसाब करती है।

गुजरता है दरिया चट्टानों से तो
मधुर संगीत गूंजता है
लड़ता है इन्सान ठोकरों से तो
भाग्य भी माथा चूमता है।

जो गिर गया हो नजरों से
उसे क्यों आंखों पर बिठाते हो
जिसे आदत हो गई हो सताने की
उसे क्यों बार-बार बुलाते हो।

सितारों की तमन्ना में इन्सान
घने अंधेरों से भी गुजरता है
डटा रहता है जो आंधियों में भी
वही पार उतरता है।

उधर सूर्य की तपिश से
बर्फ पिघल रही थी
नदियां गुनगुना रही थी
इधर सेवा में उठे हाथों को देखकर
इन्सानियत मुस्कुरा रही थी।

अनुमान से नहीं परखी जाती
किसी के व्यक्तित्व की गहराई
ठहरी हुई जोत अक्सर
अधिक प्रकाश देती है।

अपनी रोशनी को न रखिए मुठ्ठी में बन्द
इसे खुल जाने दो खिल जाने दो
ये जिन्दगी है जनाब
जितना बिखरेंगे उतना निखरेंगे।

आ जाए चाहे कितना तूफान
वटवृक्ष उखड़ा नहीं करते
हो जिनकी जड़ें गहरी
वो इन्सान बिखरा नहीं करते।

दूसरों को सता कर जीए तो क्या जीए
अपना बनाकर न जीए तो क्या जीए
खुशियां बांटकर ही खिलता है ये गुलशन
इसे उजाड़कर जीए तो क्या जीए।

बहुत तलाश है अगर उस खुदा की
तो चलिए
अपने भीतर आने से पहले
कुछ उदास चेहरों को मुस्कान
दे दी जाए।

अगर उड़ चले हो आसमां पर तो
जमीन पर भी नजर रखिए
उड़ कर फिर आना है इसी जीम पर
इसकी भी खबर रखिए।

बिखर गई है जिन्दगी तो उसे
बाहर न सजाया जाए
समेट कर अतृप्त इच्छाओं को
कुछ अपने करीब आया जाए।

मिट जाएगा यह अंधेरा भी
हमारी करूणा के विस्तार से
नफरत का जहर हटाकर
अगर हम
मिलते रहे प्यार से।

चलती है तेज हवा तो
पेड़ों की गोद से फल
छूट जाया करते हैं
रिशतों के कोमल धागे
परस्पर तनाव से
टूट जाया करते हैं।

हो हवा में जोर तुफानी शोर
माझी कशती पार उतार लेता है
जूझकर चट्टानी ठोकड़ों से इन्सान
अपना जीवन संवार लेता है।

हर किसी के वश में नहीं होता
दूसरों की सेवा में जुट जाना
दिल को समंदर होना पड़ता है।

हो सके तो किसी की गुस्ताखियों को
माफ कर दो
दिल पर बोझ लेने से
सफर आसां नहीं होता।

जिसको है भरोसा खुद पर
वह पैदल चलकर भी
लक्ष्य तक पहुँच जाता है
जो दौड़ता है हड़बड़ाहट में
वह बीच में ही रास्ता छोड़ जाता है।

टकराती है पेड़ों की शाखएं
अक्सर टूट जाती है
घर में गहराते तनाव से
संतान उड़ान लेना भूल जाती है।

वक्त और हालात पे रोया क्यों जाए

एक दूसरे को कोसते कोसते

सोया क्यों जाए

कुछ बेहतर करने से बदलेगा मौसम

इस बंजर होती जमीन में

कोई नया बीज बोया जाए।

कोई पेशानी बड़ी नहीं होती

इन्सान के होंसले के आगे

हो सच्ची लगन तो आसमां भी झुक जाता है

घने अंधेरे के बाद नया सूर्य उग आता है।

पहले ही जहर बहुत है हवा में

अब इसे और न फैलाईये

सजाईए बगीचा प्रेम का

दिल से फूल लगाईए।

वो क्या डरेंगे आंधियों से
जिन्होंने लुटा दिया है आशियां
जो मिट गये दूसरों के लिए
उनका ही रहेगा बाकी निशां।

दूर से ही सही
हम मिलें जुलें खिलें
मीठी मुलाकात हो जाए
भुलाकर गिले शिकवे सब
भरी बरसात हो जाएं।

खुद के भरोसे ही
लड़ी जाती है
अपनी लड़ाईयां
दूसरों के सहारे
अक्सर छूट जाया करते हैं।

हो गई हो दर्द की इंतहा तो
थोड़ा अपने करीब आ जाईए
यही वह जगह है
जहां ठहरकर हमें सुकून मिलता है।

हम खोजते रहे सुन्दर चेहरे
और लिबास में
एक अच्छे इन्सान को
वक्त ने आईना दिखाकर
सही चेहरा दिखा दिया।

उसे रोक लेना चाहिए
जिद करके भी
जिसके पास होने से
रूह को सुकून मिल जाए।

संजोए रखिए जीवन की
मधुर यादों को
न जाने कब उदास चेहरे पर
मुस्कान दे जाए।

किसी से क्या शिकवा शिकायत करें
जिसने जाना ही हो
उससे क्या बगावत करें।

लोगों की जिद के आगे झुके तो
दिल में गिला रहता है
अपनी मौज में आकर झुके तो
दिल खिला रहता है।

कभी कभी खुद से भी

मुलाकात कर लीजिए

जनाब

कुछ खुशियां हमारे भीतर से भी आती हैं।

संयोग कहा या अच्छी किस्मत

कोई फर्क नहीं पड़ता

उसे मंजिल दिखाइ नहीं पड़ती

जो संघर्ष नहीं करता।

भीगता गया दिल प्रेम की बारिश में

भीतर की कालिमा बहती गई

बसती गई प्रेम की दुनियां

नफरत की दीवारें ढहती गईं।

होगा अपने भीतर दर्द तभी हम
दूसरों का दर्द भी ले पायेंगे
पिघलाकर जीवन की तपिश में खुद को
दूसरों को भी रोशनी दे पायेंगे।

आयेंगी बहारें फिर मिलेंगे
फिर खिलेंगे
तोड़कर खामोशियां इस उदास मौसम की
दिल के दरवाजे फिर खुलेंगे।

हम इच्छाओं की उड़ान देते रहे
जरूरतें आकर उन्हें
सपनों में बदलती रही।

धीरे - धीरे उतरता है आसमान
अन्तर्मन में
ज्यों ज्यों जमीं काई हटती जाती है
मन के तालाब में
डतनी ही रोशनी खिलती जाती है।

अगर तृप्त हो गये हो
दूसरों की कमियां गिनते गिनते तो
आईए थोड़ा अपने भीतर का
द्वार भी खटखटा लें।

गूंजती है जब बच्चों की किलकारियां तो
समां बन्ध जाता है
उठती है जब दिल से मधुर आवाजें तो
भीतर उमड़ता तूफान भी थम जाता है।

ये जिन्दगी है जनाब
यहां सपने खुद नहीं बनते
बुनने पड़ते हैं
जाना हो खूबसूरत मंजिलों की ओर तो
कठिन रास्ते चुनने पड़ते हैं।

बदल जाते हैं अंधकारमय दृश्य भी
अगर कोशिशों में जोश हो
खिल जाती है जज्बातों की बगिया
अगर बेचैनी में भी होश हो।

जरूरी नहीं कि बसन्त में ही बहार आए
आ जाए अगर इन्सान अपनी
जिद्द पर तो
पतझड़ भी गुलजार हो जाए।

न छेड़िए राग नफरत के
प्रेम की बांसुरी बजाईये
जोड़कर दिलों के टूटे तार
सुरों के साज सजाईये।

अच्छे बुरे का खेल है जिन्दगी
कभी सुख कभी दुख का मेल है जिन्दगी
बांटते रहें एक दूसरे का दर्द भी तो
सपनों का सुन्दर तालमेल है जिन्दगी।

लड़ें झगड़ें हम चाहे दूर हो जाएं
लेकिन इतना भी नहीं कि
कल फिर मिलें और गले न लग पाएं।

गुजरा वक्त अगर सुखद न था तो
जिक्र करके परेशान न कीजिए
कैसे बदलेगा अब मौसम
उन रास्तों की पहचान कीजिए।

चलिए निकलते हैं बन्द गलियों से
सुनहरी सुबह का आभास होगा
खुलेगी दिल की जितनी बन्द खिड़कियां
उतना ही भीतर प्रकाश होगा।

दूसरों की व्यथा जीने से ही
अपनी कथा बनती है
होती है जब दिलों पर प्रेम की वर्षा तो
जीवन की बगिया खिलती है।

देनी है रिश्तों को उड़ान तो
दूसरों से अधिक उम्मीद रखना छोड़िए
करके अपने हुनर पर विश्वास
सुकून की मधुर तान छोड़िए।

कामनाओं के भंवर में
डूबता उतराता रहता है आदमी
कभी खुद के पास आकर सुस्ताता
कभी खुद से ही दूर हो जाता है आदमी।
बयां हो जाती है खामोशियां भी
अगर रिश्तों में विश्वास हो
तन्हा रह जाती है जिन्दगी अगर
एक दूसरे पर न विश्वास हो।

अपने कोमल हृदय को
सम्भाल कर रखिये जनाब
यह दुनिया है यहां
जो जल्दी पिघलता है
वही अधिक जलता है।

अच्छे शब्दों को हवा में
उछालने से पहले
जमीं पर उतार लिया जाए
बदरंग होते इन्सानियत के चेहरे को
थोड़ा संवार लिया जाए।

हमारा बाहरी संसार
हमारे मन का ही विस्तार है
जिस भाव में तल्लीन होंगे
उसी के शौकीन होंगे।

फर्क पड़ता है दिलों में
प्रेम से पुकार कर तो देखिये
बदल जाता है मौसम
बाहें फैलाकर तो देखिये।

आंखो से बहते आंसू भी
कमाल करते हैं
बहाकर दिल के दर्द को
मन का दर्पण साफ कर जाते हैं।

डूब जाती है समंदर में कस्तियां
अगर नाविक में हौंसला न हो
मिट जाती है बड़ी बड़ी हस्तियां
यदि आसमां का फैसला हो।

जिन्दगी के सफर में यादें
कभी आंसू कभी मुस्कान
दे जाती है
उतार कर बोझ उलझनों का
रास्ता आसान कर जाती है।

निकलते हैं जब शब्द नफरत से तो
सब को परेशान कर जाते हैं
उतरते हैं वे जब दिल से तो
बुझे चेहरों पर मुस्कान दे जाते हैं।

हम दौड़े थे समय को
मुठ्ठी में कैद करने
वह फिसलता चला गया
संजोयी थी हमने जो उम्मीदें
सबको कुचलता चला

दौड़ता है झूठ खूब आजकल
खुद पर बहुत इतराता है
थोड़ी देर के लिए ही सही
लेगों को भ्रम में डाल जाता है।

ढल जाती है सुन्दरता
उम्र गुजरने के साथ
बढ़जाती है सुन्दरता
दिल में उतरने के बाद।

बहुत आसान होता है
दूसरों की भावनाओं से खेलना
कभी अपनी उम्मीदों को टूटता देखें
तो पता चले।

वो क्या जाने दर्द पराया
जो कभी दर्द से गुजरा ही नहीं
लहरों की मार झेलने के लिए
जो सागर में कभी उतरा ही नहीं।

वही विजयी होता है युद्ध भूमि में जो
छलनी होता है दुश्मन के तीरों से
जे कूद पड़ता है विरोधों के चक्रव्यूह में
वही शामिल होता है शूरवीरों में।

हैं दूरियां इन्हें न मजबूरियां बनाईये
दूर से ही सही बतियाईये मुस्कुराईये
बदलेगा यह उदास मौसम भी
परस्पर संवाद से ये दूरियां मिटाईये।

आसान नहीं होता
अपने सपने पूरे कर लेना
कुछ सपने जमीन पर उतरने के लिए
वर्षों का सुख चैन मांग लेते हैं।

हमारी कोशिशों से समय की
सूरत बदलती है
खुशियां बांट देने से इंसानियत की मूरत बदलती है
गुजरते है जब कठिन रास्तों से हम तो
खूबसूरत मंजिले मिलती हैं।

नफरत के बाजार में चले थे
खुशी की तलाश में
खुशी मुहब्बत की गोद में बैठी
मुस्कुरा रही थी।

दूसरों द्वारा जगाने पर नहीं
खुद जाग जाने पर ही
मौसम निराला होता है
भीतर की नहीं टूटने पर ही
बाहर उजाला होता है।

अगर कोई परवाह नहीं करता हमारी तो
क्यों चिपका जाए
गुलाम होने से बेहतर है
उड़ता परिंदा हुआ जाए।

क्यों रूलाते हो किसी को
उन्हें मना लिया जाए
दिल के दर्द दूरियां बढ़ाने से नहीं
करीब आने से मिटते हैं।

हमारी उम्मीदों से नहीं तरकीबों से
मुश्किलें दूर होती है
पास आ जाती है मंजिले जब
कोशिशें भरपूर होती है।

उधर पहाड़ से उतरकर बादल
ब्यास में नहा रहे थे
इधर खेतों में किसान पसीना बहा रहे थे
धरती की यह मौज देखकर
पक्षी भी गीत गा रहे थे।

आज सुबह नदी से उठते बादलों ने
चुपके से कान में कहा
तुम भी जी भर कर बरसो
एक दूसरे के काम आओ न जताओ
खुशियां बरसाकर मिट जाना ही
जिन्दगी है।

नई फुलवाड़ी का दौर है
इन्हें महकने दीजिए
छू न जाए नफरत की हवा
इन्हें चहकने दीजिए।

आती रही आंधियां वह चलता रहा
कांटों की सेज पर वह पलता रहा
वह थका मगर हारा नहीं
इसी हिम्मत पर जीवन फलता रहा।

जमी हैं रिश्तों पर धूल तो
प्रेम भरी पुकार चाहिए
शिकायतें भुलाने के लिए
आदमी दिलदार चाहिए
बचानी है रिश्तों की दुनियां तो
छल रहित व्यवहार चाहिए।

हो कभी अपना जिद्द पर तो
हार जाना चाहिए
कभी थोड़ा झुककर
रिश्ता संवार लेना चाहिए।

जब हम फैकते हैं कीचड़ दूसरों पर
वह अपने पर भी दाग छोड़ जाता है
मचाकर उथल पुथल भीतर
शांत गढ़ को तोड़ जाता है।

नफरत का सफर हमारी चेतना को
तार तार कर देता है
बुझाकर भीतर के दीये को
बाहर अंधकार करता है।

पुकारते हैं जोर से तो
पर्वतों से केवल प्रतिध्वनि गूंजती है
प्यार की पुकार से दिलों में
मधुर वीणा फूटती है।

बिछी थी नदी पर गहरी धुंध

श्वेत बर्फ जैसी

बाल सूर्य उसमें तैरता

सुनहरी आभा बिखेरता

अठखेलियां कर रहा था।

जुगनुओं ने छेड़े हैं तराने

लुकछिप मंडरा रहे हैं

अंधेरी रात में टिमटिमाकर

दूसरों को रास्ता दिखा रहे हैं।

वे दूसरों पर बिजलियां गिराने की

राह देख रहे थे

बेखबर थे कि चलेंगी हवायें उस ओर भी

सुख चैन जाएगा।

अगर मिला है मौका आसमां छूने का तो
जरा सम्भलकर चलिये
उतरते समय कहीं जमीन न खिसक जाए।

चेहरे से चेहरों को हटाकर ही
आदमी अच्छा हो पाता है
सुनकर रूह की आवाज़ को
आदमी सच्चा हो जाता है।

जो दुखी हैं मजबूर हैं
चलिए उनके पास होलें
बन्द पड़े दिल के किवाड़ खोलें
प्रेम के झोंकों से ही बदलेगा मौसम
जरा अपने दिल पर जीम मैल धोलें।
हर आदमी खास होता है दुनिया में
केवल सोच का फर्क होता है
कोई बचाता है किसी को
कोई बेड़ा गर्क कर जाता है।

कहीं बिछी है चांदनी कहीं
अमावस्या का डेरा है
जो वंचित है अपने हिस्से की धूप से
वहीं छाया अंधेरा है।

किसी को पसन्द करना और चाहना ही
कामी नहीं होता
जरूरी होता है निभाना और
दिल में जगह बना लेना।

जो निकले हैं घर से
छूसरों को खुशियां बांटने
उनको क्या हरायेगा जमाना
जिन्होंने रखली हो हथेली पर जान
उनको क्या डरायेगा जमाना।

जहां जाने से हमारा
अस्तित्व गुम हो जाए
वहां जाया क्यों जाए
दूसरों के इशारों पर खुद को
नचाया क्यों जाए।

मिलता है कोई हमसफ़र
तो निभाते चलिये
बनें बेसहारों को सहारा
ऐसा रास्ता बनाते चलिये
हमारी कोशिशों से ही खुलेगा
ये उदास मौसम
रास्तों से मुश्किलें हटाते
मुस्कुराते चलिये।

बचाकर रखिये अपने भीतर
उतरती रोशनी को
कभी अंधेरों में रास्ता
दिखाती मिलेगी।

जब गुजरते हैं दर्द के सागर से हम तो
मोती बनकर निखरते हैं
आ जाए चाहे बाधाएं कितनी
सबसे आसानी से निपटते हैं।
हमने अंधेरे में पुकारा उन्हें
जो उजाले में पास थे
नजरे चुराकर निकल गये वो
जे उजाले में साथ थे।

किसी सहृदय की तलाश में
हम निकले थे
इस कंक्रीट के जंगल में
वह बावरा दीवरो से बात करता
अकेला मिला।

बड़ा बेदर्द हो गया इन्सान
हो कुछ भी भला बुरा उसे
कोई फर्क नहीं पड़ता
कोई लुट जाए या पिट जाए
दिल में कोई दर्द नहीं उठता।

जहां उठती है रिश्तों में शक की आवाजें

वहां प्यार कैसा

जहां बार बार बोलती है शिकायतें

वहां एतबार कैसा।

बाहर से बड़ी होती है

हमारे भीतर की लड़ाई

जो कभी घने अंधकार में डूबो देती है

कभी निकालकर अंधेरे से

रोशनी में भीगो देती है।

झोपंडी को मिटा कर वो चले थे

अपना आशियां सजाने

गरीब की इक आह ने

सब तबाह कर दिया।

हो सकता है मौसम खुशनुमा
खुद पर एतबार चाहिए
लहरों पर उतरने की माझी तैयार चाहिए
इक जुनून से ही मिलती है
खूबसूरत मंजिलें
ठोकरो से लड़ने के लिए
राही होशियार चाहिए।

फूल मुस्कुरा रहे थे
पक्षी गुनगुना रहे थे
कह रहे थे
जरा प्रेम से चलिए
यह जिन्दगी किसी का दिल दुखाने से नहीं
किसी का हो जाने से चलती है।

होती है जब प्रेम की वर्षा तो
मन की मैल धुल जाती है
उतर जाता है छल कपट का चोला
उजड़ती दुनियां खिल जाती है।

हमारी मेहनत से ही
खुलते है किस्मत के दरवाजे
मंजिलें खुद पास नहीं आती

आज सुबह उतरा था सूर्य
धुंध की आगोश में
ब्यास के किनारे
लधु लहरों पर सूर्य की किरणें
ऐसे खेल रही थी
मनों नदी पर चांदी जड़ा आंचल
लहरा रहा हो।

कीचड़ में खिलकर फूल
कमल हो जाता है
मुसीबतों से लड़कर ही इन्सान
सफल हो पाता है।

बहुत मुश्किल होता है
गमों में खुश हो जाना
जहर पी जाना पड़ता है
मुस्कुराने के लिए।

संकट आते हैं जाते हैं
कभी गिराते कभी हमें
हरा जाते हैं
गिरकर जो फिर उठकर लड़ते हैं
वही मौसम बदल जाते हैं।

मिलिये जुलिये बतियाईये
थोड़ा मुस्कुराईये
यूं ना नाराजगी में मुँह फुलाईये
पहले ही जहर बहुत है हवा में
प्रेम की दवा देकर
इसे दूर भगाईये।

बहुत भरोसा था जिन पर
वे दगा दे गये
साथ वो निभा गये जो
कभी गिनती में न थे।

बंट जाती है खुशियां दूसरों में तो
वे विस्तार पाती हैं
देकर दिल को तसल्ली
खुला संसार दे जाती है।

होते हैं पास पास लेकिन
बात हो नहीं पाती
अपने अंधेरों से निकलकर
मुलाकात हो नहीं पाती।

बरसात में सूर्यास्त के समय
कांढी की पहाड़ियों पर
बादल हवा के साथ होकर
अठखेलियां कर रहे थे
कभी सुनहरे कभी गुलाबी
कभी लाल रंग का आंचल ओढ़कर
सूर्य को रिझा रहे थे
देवदार के वृक्ष स्थित प्रज्ञ
यह नजारा देख रहे थे
सूर्य कभी बादलों के बीच से झांकता
आंखे मूंदता और कभी मुस्कुरता
कह रहा था
जिन्दगी रंग बिरंगी है आनन्द लीजिए
कुछ मुस्कुराइये और कुछ
दूसरों के हो जाईए।

बजती है जब गम के सुरों की बांसुरी तो
दिल पिघलता है
गमों से उलझकर ही
इन्सान को रास्ता मिलता है।

जितनी दूसरों से बढ़ती गई उम्मीदें
जीना हराम हो गया
ज्यों ज्यों छूटती गई उम्मीदें
रास्ता आसान हो गया।

बहुत आसान होता है
अंधेरों के साथ हो लेना
जिन्दगी खपानी पड़ती है
एक मुठठी धूप के लिए

टूटी है जब जब उम्मीदें इन्सान की
वह फिर खड़ा हुआ है
विरोधों से टकराकर ही
उसका कद बड़ा हुआ है।

कल शाम उठे थे काले बादल
सूर्य को ढक लेने के लिए
सूर्य उनको अपने रंग देकर
विदा करता रहा।

कहीं जलती है अरमानों की होली
कहीं फूल झरा करते हैं
ये जिन्दगी है जनाब
यहां ठाकरो से लड़कर ही
दिन फिरा करते हैं।

ये यादें ही तो है जो
तन्हाईयों को रौशन कर जाती है
कभी छूती हैं दिलों को
आखें नम कर जाती है।

आज संध्या सुन्दरी
सुनहरी बादलों का घूंघट ओढ़े
उतर रही थी धरती पर
वर्षा से सनी पायल की झंकार लिए।

दिमाग से दिलतक उतरते हैं रिश्ते तो
खिल जाया करते हैं
जज्बातों के पालने में झूलकर
टूटे दिल भी मिल जाया करते हैं।

वो नफरत का जहर लेकर
पहुंच गये थे आंगन तक
हमने प्रेम के तराने छेड़कर
किस्सा तमाम कर दिया।

आ जाए कितनी प्रतिध्वनियां
प्यार की पुकार जारी रखिये
पिघल जाती है जमी बर्फ भी
दिलों पर प्रेम की फुहार जारी रखिये।

खुद ही ढूंढना पड़ता है रास्ता यहां
कोई सहारा नहीं मिलता
संघर्षों से उलझे बिना
कोई सुन्दर किनारा नहीं मिलता।

मुस्कुराहटों के खरीददार तो
हम सब होते हैं
कभी आंसुओं की पड़ताल भी की जाए
तो बात बने।

चले थे बहुत दूर तक
दूसरों की कमियां ढूंढने
नजदीक से खुद को देखा तो
आगे चलना भूल गये।

इधर काली घटाएं बरसकर
मौसम को निराला बना रही थी
उधर इन्सानियत भूखे बच्चों को
निवाला खिला रही थी।

टूटा है भीतर से इस कदर इन्सान
बहर सहज हो नहीं पाता है
मिलता है अपनी उलझनों में खोया खोया सा
दिल की बात कह नहीं पाता है।